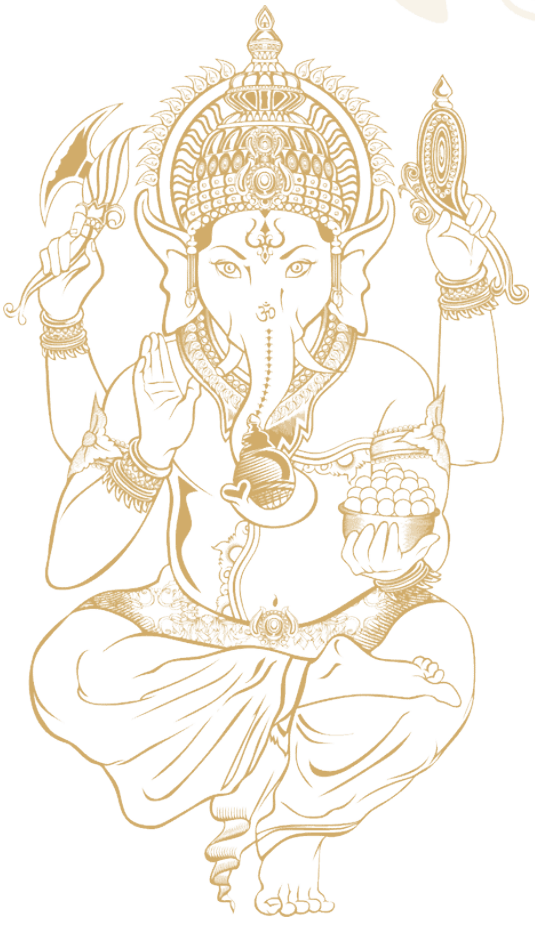

Yash Pooja

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121859505

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	05/10/1997
मंगलवार	दिन	रविवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	20:45:00 घंटे
घटी 24:46:54	जन्म समय(घटी)	36:06:32 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Alwar
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	27:32:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	76:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:23:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	06:18:23
19:22:33	सूर्यास्त	18:05:29
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:28

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 7वर्ष 5मा 5दि	29:53:09	तुला	लग्न	वृष	09:17:25	गुरु 1वर्ष 2मा 25दि
शुक्र	21:15:51	मिथु	सूर्य	कन्या	18:35:32	बुध
11/12/2012	24:10:17	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	02:18:13	31/12/2017
11/12/2032	06:52:11	मिथु	मंगल	वृश्चि	10:53:18	31/12/2034
शुक्र 12/04/2016	15:48:29	कर्क	बुध	कन्या	12:17:13	बुध 28/05/2020
सूर्य 12/04/2017	04:02:28	मीन	गुरु व	मक	18:16:43	केतु 25/05/2021
चन्द्र 12/12/2018	21:30:46	वृष	शुक्र	वृश्चि	03:07:56	शुक्र 25/03/2024
मंगल 11/02/2020	08:29:07	मेष	शनि व	मीन	23:26:30	सूर्य 30/01/2025
राहु 11/02/2023	08:39:08	सिंह व	राहु व	सिंह	25:44:33	चन्द्र 01/07/2026
गुरु 12/10/2025	08:39:08	कुंभ व	केतु व	कुंभ	25:44:33	मंगल 28/06/2027
शनि 11/12/2028	17:57:11	मक व	हर्ष व	मक	10:56:39	राहु 15/01/2030
बुध 12/10/2031	07:22:31	मक व	नेप व	मक	03:21:32	गुरु 22/04/2032
केतु 11/12/2032	11:52:15	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	09:46:12	शनि 31/12/2034

लग्न-चलित

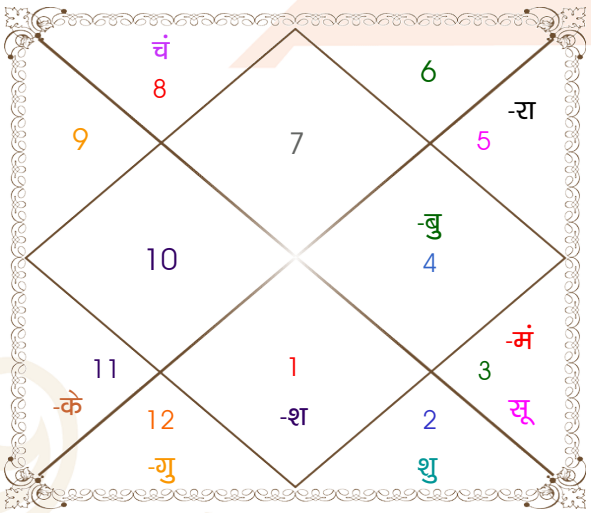

लग्न-चलित

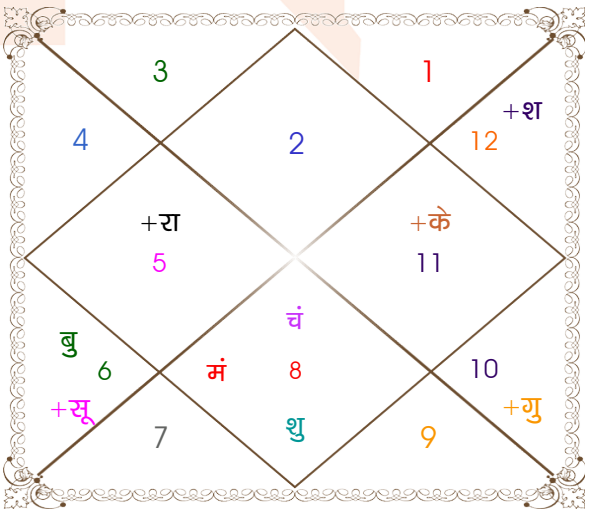

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	31.50		

लैं का वर्ग मृग है तथा च्ववरं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैं और च्ववरं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

लैं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

च्ववरं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल च्ववरं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र च्ववरं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि लैं कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लैं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

लैं तथा च्ववरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।